RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

विश्व सिनेमा के इतिहास का विहंगावलोकन

डॉ. विजय शिंदे

देवगिरी महाविद्यालय, औरंगाबाद - 431005 महाराष्ट्र).

28 दिसंबर, 1895 में आयोजित पहले फिल्मी शो की देन लिमिएर बंधुओं की रही। 'द अरायव्हल ऑफ अ ट्रेन' उनकी पहली फिल्म बनी और सिनेमाटोग्राफी मशीन के सहारे बाद में उन्होंने कई छोटी-छोटी फिल्मों को दिखाना शुरू किया। उनके इन दृश्यों में कॅमरा एक ही जगह पर सेट करके फिल्मांकन होता था, उसमें कई कमियां थी परंतु पूरे विश्व में विविध जगहों पर हो रहे उनके प्रदर्शन और उसे देख विद्वान और लोगों के आकर्षण तथा आश्चर्य का कोई पारावार नहीं था। इन फिल्मों का प्रदर्शन होता था उससे पहले विभिन्न देशों के अखबारों और उन शहरों में उसका प्रचार-प्रसार जोरशोर से होता था कि आपके शहरों मे सदी के सबसे बड़े चमत्कार का प्रदर्शन होने जा रहा है। इसका परिणाम यह हुआ कि शौकिन, जिनके पास पैसा था वे, कौतुहल रखनेवाले, वैज्ञानिक, पत्रकार, चिंतक, साहित्यकार तथा सभी वर्गों के लोग इस चमत्कार को आंखों से देखने तथा उसका साक्षी होने के लिए उपस्थित रहा कर रहे थे और सच मायने में चकित भी हो रहे थे। तभी वैज्ञानिक, चिंतक, इस विषय में रुचि रखनेवालों के साथ बाकी सब ने भी यह पहचान लिया था कि इसतरह से परदे पर चलते-फिरते चित्रों को देखना सच्चे मायने में अद्भुत है और इस तकनीक में असीम संभावनाएं भी है, भविष्य में यह तकनीक सचमुच सदी का सबसे बड़ा चमत्कार और अद्भुत खोज साबित होगी बता रही थी। आज विश्व सिनेमा जिन स्थितियों में है उससे आरंभ के समीक्षक और विद्वानों ने कहीं बात की सच्चाई साबित भी होती है। आज सिनेमा का भविष्य और ताकतवर, उज्ज्वल होने की संभावनाएं दिख रही है। नवीन तकनीकों के चलते सामान्य लोगों तक वह और बेहतर रूप में आसानी के साथ पहुंचेगा।

मूक फिल्मों से सवाक फिल्मों तक का सफर तय करते तथा आरंभिक सिनेमाई विकास की गति धीमी थी। इसके तकनीकों को लेकर शोध जारी था। आरंभिक तीस-पैंतीस सालों तक इसके विकास और तकनीक परिवर्तन की गति भी धीमी थी पर लोगों में उत्साह ज्यादा था। जैसे ही फिल्मों में कहानी ढली तथा आवाज के साथ संगीत जुड़ा और वह रंगीन हो गया तब मानो सिनेमा में चार चांद लग गए। इसके बाद सिनेमा के विकास और तकनीकों में भी अद्भुत परिवर्तन आ गया। आज विश्व सिनेमा में जितनी भी बड़ी खोज हो चुकी वह सारी भारतीय सिनेमा जगत में देखी जा सकती है। उससे हम कल्पना कर सकते हैं कि 1895 से 1930 तक का सिनेमाई सफर धीरे-धीरे और वहां से आगे आज-तक 85 वर्षों में कितना परिवर्तित हो गया। सरसरी नजर से कहे तो केवल पचास वर्षों में इसमें इतना परिवर्तन आ गया कि जिससे पूरी दुनिया चकित है। मनुष्य की ज्यादा से ज्यादा लंबी जिंदगी सौ वर्ष भी मानी जाए तो सिनेमा निर्माण और उसका चरम पर पहुंचना एक इंसान के लिए उसकी आंखों देखी है। आज-कल तो यह तकनीकें इतनी आसान हो गई है कि आप केवल कॅमरे और कंप्युटर के बलबूते पर बहुत और बहुत अच्छी फिल्म बना सकते हैं। ईरानी नव सिनेमा के प्रणेता जाफर पनाहिने इसका उदाहरण है। 'द व्हाईट बलुन')1995(, 'द सर्कल')2000(, 'ऑफसाईड')2006(जैसी ईरानी फिल्में उन्होंने बनाई तो न केवल उनके देश में तो विश्व सिनेमा में मानो धमाका हो गया। जिन विषयों और तकनीकों को उन्होंने उठाया उससे उनकी सरकार परेशान हो गई उन पर फिल्में बनाने के लिए पाबंदी लगवाई गई। फिर भी नए तकनीकों के सहारे बिना पैसा लगाए उन्होंने पाबंदी के बावजूद भी इसे बनना जारी रखा। 'दिस इज नॉट अ फिल्म')2011(, 'क्लोज्ड कर्टन')2013(जैसी फिल्मों ने इनके दिमाग के तारों को खोल दिया। 2015 में आयोजित कॉन फिल्म समारोह में इनकी फिल्म 'टॅक्सी')2015(को पुरुस्कृत किया जाना बताता है कि दुनिया की कोई भी ताकत किसी को भी फिल्में बनाने से और उसे प्रदर्शित करने से रोक नहीं सकती। कुछ ही दिनों में बिल्कुल कम लागत में केवल एक कॅमरे से और कंप्युटर तकनीक से बनी 'टॅक्सी'

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

सम्मानित हो सकती है तो यह बहुत छोटा सिनेमाई इतिहास बहुत बड़ी ताकत दिखा देता है साथ ही निकट भविष्य में प्रत्येक व्यक्ति के लिए निर्माण क्षेत्र खुलने का भी संकेत देता है।

यहां विश्व सिनेमा का विहंगावलोकन है। पाठक यह मानने की भूल ना करें कि यह संपूर्ण इतिहास है, परिपूर्ण इतिहास है। यह इतना बड़ा क्षेत्र है कि इस पर कई किताबें लिखी जा सकती है। यह एक सागर के बूंद में से छोटे हिस्से को पकड़ने जैसा है। हमारी आंखें अगर खुली है तो हमारे आस-पास इससे जुड़ी कई बातें देखने और पढ़ने को मिलेगी। सरसरी नजर से इसे केवल एक विहंगावलोकन ही माने।

विश्व में कई देश हैं और कई भाषाएं भी है। फिल्म इंडस्ट्री भी इस तरह से विस्तृत और व्यापक है। फिल्म मनुष्यों के लिए मानो भूतकाल को दुबारा जीवंत करना, यथार्थ से परिचित होना और भविष्य में ताक-झांक करने जैसा है। अपने ही जीवन से जुड़ी घटनाएं एक साथ दो-ढाई घंटे मे परदे पर दृश्य रूप और ध्वनि के साथ साकार होना तीनों लोकों (भूत-वर्तमान-भविष्य) का सफर करने जैसा ही है। इंसान ने सिनेमा को जादू-सा पाया और दुनिया की वास्तविकताओं, कल्पनाओं को एक ही जगह पर देख लिया और उसमें से बहुत कुछ अपनी झोली में भरना चाहा।

1. आरंभ, बदलती तकनीक और तस्वीरें

सिनेमा का आरंभ 28 दिसंबर, 1895 लिमिएर बंधुओं की फिल्म 'द अरायव्हल ऑफ अ ट्रेन' है। उसी दौरान जॉर्ज मेलिएस जैसे कई विद्वान इस नई तकनिक को पकड़ने की कोशिश कर रहे थे। जॉर्ज मेलिएस को भी इसमें सफलता मिल गई वैसे कइयों के हाथों में यह तकनीक आती गई और सबके रुचि के चलते इसमें बड़ी गति के साथ कार्य और फिल्म निर्माण होने लगा। शुरुआती दौर में कॅमरा को एक जगह पर सेट करके दृश्यों को फिल्माया जाता था और एक ही फिल्मांकन पूरी फिल्म माना जाता रहा। दो दृश्यों को जोड़ने का सफल प्रयोग रॉबर्ट डब्ल्यू पॉल की फिल्म 'कम अलांग डू!' में किया गया। फिल्मों में कहानी का समावेश करने का पहला सफल प्रयास एडविस पोर्टर और जॉर्ज मेलिएस ने किया। एडविस पोर्टर की फिल्म 'द ग्रेट ट्रेन रॉबरी' (1903) का प्रभाव दर्शकों पर बड़े पैमाने पर पड़ा। फिल्म के भीतर एक डकैत सामने बंदूक करके जब गोली चलाते हुए देखा तो दर्शक अपने-आपको बचाते भागने-बचने लगे। वहीं ' द अरायव्हल आफ ट्रेन' को लेकर हुआ गाड़ी अपने तरफ आते देख दर्शक घबराते हुए छिपने लगे थे। आज थ्री डी तकनीक से जो परिर्तन आया उससे भी दर्शकों ने कुछ ऐसा ही अनुभव लिया। पोर्टर द्वारा बनाई फिल्म 'द ग्रेट ट्रेन रॉबरी' और 'लाईफ ऑफ अमेरिकन फायर मॅन' कई दृश्यों को जुड़कर कहानी बताने में सफल हुआ।

जॉर्ज मेलिएस ने अपनी जिंदगी में लगभग पांच सौ लघु फिल्में बनाई जो कई विषयों से जुड़ती गई। अर्थात् मेलिएस का सिनेमाई दुनिया के लिए बड़ा योगदान कथा संरचना (नॅरेटिव्ह स्ट्रक्चर) को लेकर रहा है। उनके कई चर्चित फिल्मों में 'ए ट्रिप टू द मून' सबसे ज्यादा लोकप्रिय हो गई। जो कथा संरचना का अच्छा नमुना तो थी ही परंतु कल्पना की उड़ान भी थी जो लोगों को चांद पर ले जाने का एहसास करवा रही थी। जॉर्ज मेलिएस मूलतः कार्टुनिस्ट थे। उन्होंने फिल्मों में यथार्थ की अपेक्षा कल्पना, चमत्कार और संभावनाओं को तलाशना शुरू किया अर्थात् इससे कथा संरचना का विकास होते गया। मेलिएस ने सिनेमा को तकनीक परिवर्तन के लिए भी योगदान दिया है। स्लो मोशन, मल्टीपल एक्सपोजर, टाइम-लैप्स फोटोग्राफी और डिजाल्व जैसे साधन मेलिएस की देन रहे और इससे कहानी कहने की कला में गति आती गई।

जॉर्ज मेलिएस ने फिल्म स्टूड़ियो का निर्माण किया और इससे फिल्में बनाने के लिए आसानी तो हो गई परंतु उसमें जो कमियां थी वह भी हटती गई। प्रकाश योजना का सफल इस्तेमाल स्टूड़ियो के निर्माण से ही संभव हुआ। 'द केव ऑफ डिमोन्स', 'ए ट्रिप टू द मून', 'द हाऊस दॅट जॅक बिल्ट' जैसी फिल्में मेलिएस की तकनीक, प्रकाश योजना और स्टूड़ियो का ही कमाल था।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

'ए ट्रिप टू द मून' (1902)

पहला कॅमरा मूवमेंट का अनुभव देने की देन लुमिएर बंधुओं की है। उन्होंने एक फिल्म के दौरान ट्रेन के पीछले हिस्से में कॅमरे को बिठा दिया और फिल्मांकन किया। आज फिल्मों के शूटिंग के दौरान इसे आधुनिकता के साथ बड़ी सफलता से उपयोग में लाया जा रहा है। कॅमरा का मूवमेंट करवाना मानो दर्शक को खुद इधर-उधर घूम-फिरकर दृश्यों को देखने का एहसास देने लगा। कॅमरा सबके लिए आंखें साबित हुआ और उसमें परिवर्तन और विकास के लिए तथा अँगल बनाने में महारत हासिल करने में निर्माता और कॅमरामन जुट गए।

लिमिएर द्वारा निर्मित सिनोमाटोग्राफी मशीन

दर्शक और फिल्मी दुनिया को जोड़ने का अहं काम कॅमरा ही करता है। हमारे सामने परदे पर जो दिखता है वह उस कॅमरा और कॅमरामन का कमाल होता है। फिल्मों का पहला अच्छा दर्शक कॅमरामन ही होता है।

2. फ्रेंच सिनेमा

सिनेमा का उद्‌गम फ्रेंच में हुआ और लिमिएर बंधुओं ने इस तीसरी आंख को दुनिया के सामने रखा। इसके बाद न केवल फ्रांस मे बल्कि पूरे विश्व में सिनेमा बनाने की होड़-सी लगी और परिवर्तन की धारा बहने लगी। फ्रेंच सिनेमा की प्रमुख देन विश्व के लिए जैसी शुरुआत है वैसी ही यह कि इन्होंने इसे मनोरंजन और तकनीक से ऊपर उठकर रचनात्मक स्वरूप देने की कोशिश की। यहां के निर्माताओं के लिए प्रत्येक फिल्म एक नवनिर्माण थी। निर्माताओं ने सिनेमा को साहित्य जैसा खुला और अभिव्यक्तिपरख विधा बनाने का कार्य किया है। तकनीक का तो बखूबी इस्तेमाल किया ही साथ ही फिल्मों को विचारोत्तेजक बनाने का श्रेय फ्रेंच सिनेमा को जाता है।

ज्यां लुक गोदार फ्रेंच सिनेमा में बड़ा नाम है इन्होंने फिल्मों को एक विधा मानते हुए कहा कि फिल्में मेरे लिए निबंध लिखने का जरिया है। उनका इस तरह से कहना फिल्म को रचनात्मक विधा तक लेकर जाता है। उनकी फिल्मों ने सिनेमाई जगत् को नई दृष्टि दी और पुरानी धारणाओं को बदल दिया। उनके द्‌वारा निर्मित 'ब्रेथलेस' यह फिल्म आज भी सिनेमा की कला सिखनेवाले छात्रों के लिए उत्कृष्ट पाठ है। गोदार के अलावा फ्रेंच सिनेमा जगत् में चार्ली चापलिन, अल्फ्रेड़ हिचकॉक, ऑर्सन वेल्स, हॉवर्ड वेल्स, जॉन फोर्ड, शाब्रोल, फ्रांसुआ त्रुफो आदि नाम भी महत्त्वपूर्ण और चर्चित रहे हैं।

नई सोच और नई तकनीक के साथ निर्माण होती फ्रेंच फिल्मों में 'ले ब्यू सर्ज', '400 ब्लोज', ब्रेथलेस', 'वीकएंड', वेटिंग फॉर गोडो' आदि फिल्में चर्चित रही। फिल्में यथार्थ को दुबारा प्रस्तुत करने का साधन नहीं है इसे फ्रेंच सिनेमा ने नकारा और अतियथार्थवादिता के साथ राजनीतिक-सामाजिक वास्तविकता को समाज के सामने रखते हुए हाई क्लास सोसायटी के पाखंड़ियों के नकाब को उतारने का भी कार्य किया। अतियथार्थवादी फिल्मों में मान रे, फर्नाद लेजे और मार्सेल दशां जैसे निर्देशकों ने योगदान दिया। इन निर्देशकों की मंशा "यथार्थ को तोड़ना और दिखावे पर आधारित सभ्यता का मजाग उड़ाना था।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 46)*

3. रूसी सिनेमा

रूस का नाम लेते ही दो व्यक्तियों के नाम उभरकर सामने आते हैं लेनिन और स्टॅलिन के। इन दोनों ने रूसी सिनेमा को प्रभावित किया है। हालांकि इन दोनों का स्थान राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तनों में प्रमुखता से आता है, परंतु रूस का प्रतिनिधित्व करने के कारण देश के अन्य क्षेत्रों पर इनके विचार, नीति-नियम और तत्त्व प्रणालियों का लंबा प्रभाव पड़ा है। सारी दुनिया को आकर्षित करनेवाले सिनेमा ने रूसी क्रांति के बाद लेनिन का भी ध्यान आकर्षित किया। लेनिन पहले से दूरदर्शी थे और सिनेमा को देखते ही उन्होंने

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

उसकी ताकत पहचानी और अपने देश में फिल्म निर्माण तकनीक विकास के लिए निर्माताओं को प्रोत्साहित भी किया। 1896 में लिमिएर बंधुओं की फिल्मों का प्रदर्शन जैसे मुंबई, पीटर्सबर्ग में हुआ वैसे ही मास्को में भी हुआ। इस प्रदर्शन से रूसी दुनिया काफी प्रभावित हो गई और लेनिन की प्रेरणा-प्रोत्साहन से सिनेमा निर्माण के क्षेत्र में जुट गई। लेनिन ने 1919 में फिल्म उद्योग का राष्ट्रीयकरण किया और उसे शिक्षा मंत्रालय के साथ भी जोड़ दिया। लेनिन की नजरों में सिनेमा की एहमीयत उसकी सफलता से और भी अधिक बढ़ती गई। आगे चलकर उन्होंने फिल्मों के अध्ययन और विकास के लिए राजकीय सिनेमा संस्थान की भी स्थापना की। राजकीय सिनेमा संस्थान के भीतर फिल्मों का अध्ययन, उनकी व्याख्या, समीक्षा-मूल्यांकन, तकनीकी ज्ञान, प्रयोग और अपनी संकल्पनाओं पर आधारित फिल्म निर्माण की आजादी भी दी थी।

रूसी सिनेमा के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए दिनेश श्रीनेत लिखते हैं, "रूस के सिनेमा की चर्चा करते समय हमें यह ध्यान रखना होगा कि सोविएत सिनेमा और रूस का सिनेमा, दोनों बिल्कुल अलग हैं। यूनियन ऑफ सोविएत सोशलिस्ट रिपब्लिक्स का अधिकारिक तौर पर 1922 में गठन हुआ। इसके बाद सामने आनेवाले सोविएत सिनेमा ने दुनिया में अपनी एक अलग पहचान बनाई। यह पहचान सिनेमा की एक अलग धारणा के साथ विकसित हुई, जो सोविएत संघ में साम्यवादी सरकार की राजनीतिक सोच से मेल खाती थी। इस विचारधारा के तहत सिनेमा में नई सोच विकसित हुई, उसे सामाजिक यथार्थवाद का नाम दिया गया।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 33)*

लिमिएर बंधुओं से प्रेरित होकर अलेक्सांद्र द्रन्कोव ने पहली बार रूस में लोककथा के आधार पर एक कथा-कहानी के साथ फिल्म का निर्माण किया। पहले महायुद्ध से पूर्व 1916 तक रूस में आरंभ की तुलना में लगभग तीन गुना ज्यादा फिल्मों का निर्माण हो रहा था। पहले महायुद्ध की छाया में राष्ट्रीय विचारधारा की फिल्में बन रही थी। जैसे ही सोविएत क्रांति होती है वैसे ही रूस में सिनेमाई दुनिया और विषय चुनाव का भी चेहरा बदल जाता है। सोविएत क्रांति से पहले 'फादर सर्जिएस' इस दौर की आखिरी फिल्म बन जाती है। पुडोवकिन, आईजेंस्टाइन, कुलेशोव, तारकोवस्की, अंतोनियोनी, आंद्रेई तारोकवस्की, सेर्गेई यूत्केविच, ग्रिगोरी कोजिनत्सेव आदि रूसी भाषा के भीतर के फिल्म निर्माण क्षेत्र में चर्चित नाम रहे हैं। पुडोवकिन ने रूस में फिल्मों के कई आदर्श स्थापित किए, फिल्म निर्माण के उत्कृष्ट नमूने पेश किए साथ ही राजनीतिक चेतना से भरी-पूरी फिल्में भी बनाई। मॅक्सिम गोर्की के उपन्यास 'मदर' पर आधारित इसी नाम से बनी फिल्म भी उसी की देन है। 'डॅसर्टर' जैसी फिल्म कई शॉट के साथ भव्य रूप में परदे पर उतरी जो सिनेमा जगत् के लिए कला का बेहतरीन उदाहरण है। इसके अलावा 'बॅटलशिप पोटेंकिन', 'द अनटचेबल', 'अक्तूबर', 'द एंड ऑफ सेंट पीटर्सबर्ग', 'द गोल्डन माउंटेन', 'द आउटस्कर्ट्स', मॅक्सिम', 'द स्टोन लावर', 'बॅलड ऑफ सायबेरिया', 'कज्जाक ऑफ द कुबान', 'द क्रेन्स आर लाइंग', 'वार अँड पीस', 'व्हाइट सन ऑफ डेजर्ट', 'सोलेरिस', 'स्टारकर', 'अन्ना कॅरेनिना' आदि फिल्में रूसी सिनेमा में चर्चित रही है।

सोविएत क्रांति के बाद फिल्म निर्माण क्षेत्र में भी परिवर्तन होता है और उसके विषय भी बदल जाते हैं। सामाजिक यथार्थवादी विचारधारा का प्रभाव राजनीति में स्टॅलीन के उदय और मजबूती के पश्चात् आ जाता है। इन्हीं दिनों ऐसी कई फिल्में बनी जिनमें रूस का गृहयुद्ध, सोविएत क्रांति और उसके कारण होनेवाले सामाजिक बदलावों का चित्रण फिल्मों में आया। कम्युनिस्ट पार्टी में स्टॅलीन अपना स्थान अधिक मजबूत करते हैं और आर्थिक मोर्चो पर कई बदलाव हो जाते हैं। सांस्कृतिक क्रांति की बात जोरदार ढंग से उठाई जाती है और इसको हथियार बनाकर अभिव्यक्ति पर रोक लगाई जाती है। लालफीताशाही के चलते फिल्मों का प्रदर्शन रूक जाता है तथा गति इतनी धीमी हो जाती है कि उसके चलते मूल कथा-पटकथा में कई कट लगते हैं, सेंसरशिप के नए सुझावों से कई बातें जुड़ जाती है। कोई फिल्म हजारों परिवर्तन के बाद पास भी हो जाए तो कब क्या होगा और फिल्म पर कब रोक लगेगी इसका भरौसा नहीं था।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

4. इटली का सिनेमा

दुनिया के अलग-अलग फिल्म उद्योग क्षेत्रों में नए प्रयोग हो रहे थे। फिल्में बनाने के लिए अच्छी तकनीक, ज्ञान, पैसा और कुशल कलाकारों के साथ अन्य लोगों की आवश्यकता पड़ती है। इनके अभाव में अगर कोई फिल्म बनाना चाहे तो बना लेता है परंतु एकाध कमी को भरने के लिए नए प्रयोग किए जाते हैं और उससे फिल्मों के लिए नए मानदंड़ भी बनते हैं। इतालवी सिनेमा ने दुनिया को जो देन दी थी वह है नवयथार्थवाद की। पूरी दुनिया में जो फिल्में बनाई जा रही थी उसमें यथार्थ अनुभवों के लिए कृत्रिम घटना-प्रसंगों को बनाया जाता था परंतु इतालवी सिनेमा में पैसों के अभाव में यथार्थ को चित्रित करने के लिए असली शूटिंग लोकेशनों को चुना गया और फिल्मी नवयथार्थवाद का जन्म हुआ। इतालवी भाषा में बनी 'बायसिकल थीव्स' फिल्म नवयथार्थवाद का आदर्श नमूना है। इसकी प्रसिद्धि, सफलता और प्रभाव से प्रेरित होकर दुनिया में इस प्रकार की फिल्में बनाने का दौर शुरू हो गया। स्टूड़ियो और बड़े सेट बनाने में जो पैसा जाया होता था उसकी इस तकनीक से बचत हो गई। "उल्लेखनीय है कि 'बायसिकल थीव्स' ने भारतीय सिनेमा को काफी गहराई से प्रभावित किया। 'बायसिकल थीव्स' सन् 1952 में भारत के पहले फिल्म समारोह में दिखाई गई थी। यह माना जाता है कि इस आंदोलन ने उस दौर के कई ऐसे निर्देशकों को फिल्म बनाने के लिए प्रेरित किया, जो बाद में भारतीय फिल्म की एक पूरी श्रृंखला के लिए खुद प्रेरणा का स्रोत बन गए। ख्वाजा अहमद अब्बास की 'मुन्ना', राजकपूर की 'जागते रहो' और विमल राय की 'दो बीघा जमीन' कुछ ऐसी ही फिल्में हैं जिन पर इटालियन नवयथार्थवाद का स्पष्ट असर नजर आता है। अपने कथ्य और यथार्थवादी शिल्प के कारण ये तीनों फिल्में दुनियाभर में सराही जाती है।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 38)* 'बायसिकल थीव्स' में साईकिल चोरी होने के बाद उसे ढूंढ़ने के लिए पिता-पुत्र पूरे शहर में घूमना शुरू करते हैं और उस शहर की एक-एक सच्ची वास्तविकता दर्शकों के सामने उतरने लगती है। इटली के सड़कों पर भटकते ये दो लोग देखते हैं कि इंसान गलत व्यवस्था का शिकार हुआ है। उसके विरोध में हाथ खड़े करने की शक्ति उसमें नहीं है, वह विवश और दयनीय बन चुका है। फिल्म का यह फॉर्म आगे चलकर न केवल भारत में तो दुनिया के अन्य देशों में भी काफी सफलता के साथ आजमाया गया।

इतालवी सिनेमा के क्षेत्र में अंबर्तो बारबरो, अंतोनियोनी, लुचीनो विस्कौंती, विक्टोरिया डी सिका, फेलिनी आदि फिल्म निर्माताओं के नाम प्रमुखता से उभरकर सामने आते हैं। 'बायसिकल थीव्स', 'रोम, ओपन सिटी', 'आय मालावोगलिया', 'उम्भर्तो डी', 'ला स्त्रादा', 'रेड डेजर्ट', 'ब्लोअप' जैसी फिल्में चर्चित रही है। आगे चलकर इटली में 'गैलो सिनेमा' के तहत कई फिल्में बनी जिसका मूलाधार सस्ती लोकप्रिय फिल्में बनाना रहा था। उसमें 'फ्रायडे द थर्टिथ', 'स्क्रीम', 'द गर्ल हू नो टू मच', 'लिजार्ट इन अ वूमेन्स स्किन', 'स्लाटर होटल', 'नाइफ ऑफ आइस', 'द केस ऑफ द स्कोर्पियोज टेल' जैसी फिल्में प्रमुख रही हैं। इनके विषय साधारणतः भय, थ्रिलर, हिंसा, नग्नता, सेक्स आदि रहा करते हैं।

5. जर्मन सिनेमा

सन् 1896 में जर्मन के भीतर ऑस्कर मेस्टेर फिल्म निर्माण के क्षेत्र में अपने कदम रखते हैं। 1910 तक उनसे प्रेरणा पाकर अन्य फिल्म निर्माणकर्ता विशेष पहल नहीं करते, अतः जर्मनी में सालाना बहुत कम फिल्में बना करती है और उसका निर्माण कार्य भी बहुत धीमा रहता है। फिल्म निर्माण में रुचि रखनेवाले लोगों ने इसकी ताकत और कलाकारिता को पहचाना था लेकिन देश के जैसे हालात थे उसके चलते इस क्षेत्र में अपने-आपको स्थापित करना तथा मनमुताबिक काम करना कठीन है, यह उन्होंने जाना था। हिटलर के उदय से पहले, हिटलर समय और हिटलर युग के बाद भी जर्मनी फिल्म इंडस्ट्री राजनैतिक दबावों को झेलती रही। सन् 1919 में रॉबर्ट वेन द्वारा निर्देशित फिल्म 'द कॅबिनेट ऑफ डॉक्टर कॅलीगरी' जर्मन फिल्मी इतिहास की काफी विवादित फिल्म साबित हो गई। विचारवंतों, समीक्षकों और दर्शकों ने इस पर काफी सवाल उठाए। इस फिल्म

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

में अभिव्यंजनावादी चित्रकला का गहरा प्रभाव पड़ा था। इसमें जो दृश्य और कल्पनाएं दिखाई थी वह वास्तविक दुनिया में संभव नहीं थी, अतः मानवीय कला का विकृत स्वरूप में लाया जाना उस काल में स्वीकार्य नहीं बना। परंतु इस फिल्म ने विश्व फिल्म इंडस्ट्री के लिए यह भी देन दी कि सिनेमा ने यथार्थ से काल्पनिक उड़ान भरी जो वास्तव में कभी भी संभव नहीं था। मनुष्य, दीवारें, इमारतें, पेड़, पहाड़ के परछाइयोंवाले बड़े स्वरूप को रंगों से भर दिया और अकल्पनीय दृश्यों को परदे पर साकार किया।

जर्मनी में फैलते नाजीवाद के चपेट में फिल्म इंडस्ट्री भी आ गई और बड़े-बड़े फिल्म निर्माता देश छोड़ अमेरिका जाने लगे। "यह वो दौर था जब बड़ी संख्या में जर्मन अभिनेताओं, निर्देशकों और छायाकारों ने अमेरिका का रुख कर लिया। हालांकि सभी इतने भाग्यशाली नहीं थे कि जर्मन से निकल सकें, कर्ट गेरन जैसे अभिनेता-निर्देशक को कंसन्ट्रेशन कँप में दिन गुजारने पड़े थे। नाजी जर्मनी ने फिल्म उद्योग पर पूरा कब्जा कर लिया। यह दौर एक दुःस्वप्न जैसा था।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 47)* फ्रॅडरिक विल्हेम, ब्राम स्टोरकर, फ्रिट्ज लांग, रिडले स्कॉट, टिम बर्टन आदियों का जर्मनी फिल्म इतिहास में आदर के साथ नाम लिया जाता है। 'द कॅबिनेट ऑफ डॉक्टर कॅलीगरी', 'नास्फेरातू, ए सिंफनी ऑफ टेरर', 'द स्टूडेंट ऑफ प्राग', 'डेस्टिनी', 'फँटम', 'द लास्ट लॉफ', 'मेट्रोपोलिस', 'एम', 'ब्लेड रनर', 'बॅटमॅन रिटर्न्स' आदि फिल्मों ने जर्मनी फिल्मी इतिहास में छाप छोड़ी है।

राजनैतिक उथल-पुथल, टेलीविजन का आगमन और मनोरंजन के अन्य साधनों के कारण जर्मन फिल्म इंडस्ट्री ने मानो दम तोड़ दिया था। परंतु युवा फिल्मकारों ने पुराने सिनेमा को ताक में छोड़कर दुबारा फिल्म निर्माण करने के लिए कमर कसी और यह इंडस्ट्री पुनर्जीवीत हो गई। "युवा फिल्मकारों के एक ग्रुप ने एक मॅनीफेस्टो जारी किया, जिसमें कहा गया था, 'पुराना सिनेमा अपनी मौत मर चुका है, हमारा यकीन नए सिनेमा में है।' इस दौर में यंग जर्मन फिल्म कमेटी का गठन किया गया। न्यू जर्मन सिनेमा कलात्मक रूप से बेहद महत्वाकांक्षी और सामाजिक रूप से आलोचना से भरा हुआ था। उसने यह प्रभाव इटैलियन नियोरिलिज्म, ब्रिटिश न्यूवेव और फ्रेंच सिनेमा से ग्रहण किया। देखें तो विश्वयुद्ध से पहले जर्मन सिनेमा ने विश्व फलक पर जो सम्मान अर्जित किया था, न्यू जर्मन सिनेमा ने उसी खोए हुए सम्मान को अपनी बेहतरीन फिल्मों के जरिए दोबारा हासिल किया।"*(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 53)*

6. हॉलीवुड़

पहले महायुद्ध से पूर्व फ्रेंच और इतालीयन फिल्म इंडस्ट्री बड़ी तेजी के साथ विश्व सिनेमा के मंच पर उभरती रही और दुनिया को काफी प्रभावित भी किया। पहला महायुद्ध शुरू होते ही मानो युरोपीयन फिल्म इंडस्ट्री को झटका लग जाता है और उसकी गति कम होती है या कहे कि वह तहस-नहस हो जाता है। युद्ध की समाप्ति होते ही फिल्म इंडस्ट्री के क्षेत्र में अमेरिका प्रमुख देश के नाते उभरकर सामने आता है और अमेरिका का कॅलीफोर्निया उसका केंद्र भी बन जाता है। आगे चलकर यहां से पूरी दुनिया के फिल्म इंडस्ट्री का संचालन शुरू होता है। फिल्मों का निर्माण और निर्मित फिल्मों को विविध देशों में निर्यात का केंद्र भी इसे माना जाता है। बाद में इसे हॉलीवुड़ नाम दिया गया। 1920 के आसपास अमेरिका सालाना 800 फिल्मों को बना रहा था और दुनियाभर में बनाई जा रही फिल्मों की तुलना में लगभग 82% फिल्में केवल अमेरिका बना रहा था और उसका वितरण-निर्यात का केंद्र हॉलीवुड़ था।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

चार्ली चॅपलीन फिल्म के भीतर का एक दृश्य

हंसी के बादशाह चार्ली चॅपलीन, बस्टर कॅटॉन, स्व्यॅसबुक्लिंग और डगलस फॅयरब्लॅक्स के कारनामें तथा क्लारा बो के रोमांस की पहचान हॉलीवुड़ से ही होती है। फिल्मों की नई तकनीकों का विकास, स्टूड़ियो प्रणाली का उचित प्रयोग, फिल्मों के प्रचार-प्रसार की विधि आदि का आदर्श स्वरूप हॉलीवुड़ ने स्थापित किया। व्यावसायिक सफलता, क्लासिकल रचनात्मकता, ग्लॅमर को बनाए रखने में कामयाबी पाने की कला की देन हॉलीवुड़ की है ऐसा माना जाना चाहिए।

अ. क्लासिक हॉलीवुड़

पहले महायुद्ध के बाद युरोपीय सिनेमा के हाथ से विश्व सिनेमा की डोर फिसल जाती है और वह कॅलीफोर्निया में स्थापना हो चुकी अमेरिकन फिल्म इंडस्ट्री के हाथों में आ जाती है। आगे चलकर इस इंडस्ट्री का नामकरण हॉलीवुड़ हो जाता है। सन् 1920 से 1960 के बीच बनी फिल्में हॉलीवुड़ तथा अमेरिकन सिनेमा जगत् का स्वर्ण काल कहलाई जाती है। 1927 में प्रदर्शित हो चुकी फिल्म 'द जॅज सिंगर' में पहली बार ध्वनि का इस्तेमाल हुआ इसने बॉक्स ऑफिस पर बहुत अधिक मुनाफा भी कमाया। इस फिल्म के निर्माता वॉर्नर बंधुओं ने इस फिल्म से प्राप्त मुनाफे से कई सिनेमा थिएटरों का निर्माण किया। इनके साथ एमजीएम, आरकेओ, पॅरामउंट और फॉक्स फिल्म कंपनियों ने भी अपने सिनेमा थिएटर बनाने का कार्य बड़ी गति के साथ शुरू किया। फिल्म तकनीक, निर्माण, कॅमरा कौशल, संपादन, प्रकाश योजना, कथा-संरचना, ध्वनि, संगीत, कलात्मकता, प्रदर्शन, व्यावसायिकता आदि बातों में एक दोस्ताना स्पर्धा निर्माण हो गई। इससे हॉलीवुड़ सिनेमा के विकास को अद्भुत गति मिली। जर्मन, फ्रांस, इटली, रूस, ब्रिटन तथा अन्य युरोपीय और पश्चिमी देशों के अंदरूनी बुरे हालात, अनेक रूकावटें-पाबंदियां और आर्थिक तनावों के चलते कई निर्माता और अभिनेता अमेरिका का रूख कर चुके थे। अमेरिका एक आर्थिक महासत्ता के तौर पर जबरदस्त रूप में उभर रहा था, इसका आकर्षण तथा फिल्में बनाने की आजादी के चलते अमेरिका की फिल्म इंडस्ट्री न केवल अपने लोगों की प्रतिभाओं के बलबूते पर तो विश्व के अन्य देशों से आयातीत प्रतिभाओं के बलबूते पर ताकतवर बनती गई। धीरे-धीरे कई तकनीकों और कलाओं का मिलाप हुआ और हॉलीवुड़ का क्लासिक दौर शुरू हुआ। "अमेरिका में सन् 1910 से 1960 के बीच बननेवाली फिल्मों की शैली को क्लासिक हॉलीवुड़ का नाम दिया जाता है। इस शैली को 'इनविजिवल स्टाइल' के नाम से जाना गया।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 55)* अमेरिकन फिल्म निर्माण की कई कंपनियों ने अपने स्टूड़ियो बनाए थे और उसमें कई अभिनेता, निर्देशक, निर्माता, लेखक, तकनीशियन और फिल्म निर्माण का छोटा-बड़ा व्यक्ति वेतन पर रखा जाता था। फिल्म निर्माण से फिल्म वितरण और दर्शकों तक सिनेमा हॉलों में पहुंचनेवाली फिल्में एक मालिकाना व्यवस्था और वेतन पर चल रही थी। इसी व्यवस्था और बढ़ते स्टूड़ियो की स्पर्धा ने हॉलीवुड़ में स्टार सिस्टम की शुरुआत हो गई। क्लार्क गेबल, ग्रेटा गार्बो, जॉन क्रॉफोर्ड, गैरी कूपर, मार्लिन ब्रांडो, एलिजाबेथ टेलर, विवियन ले, जॉन वेन जैसे नाम आरंभिक स्टार के रूप में उभरते गए।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

आर्सन वेल्स, हावर्ड हॅंक्स, अल्फ्रेड हिचकॉक, फॉक कॉपरा, वॉल्ट डिज्नी आदियों के नाम क्लासिक हॉलीवुड़ फिल्म निर्माण के क्षेत्र में लिए जाते हैं। इस दौरान 'द जॅज सिंगर', 'सिटिजन केन', 'कासाब्लांका', 'इट्स अ वंडरफुल लाईफ', 'इट हॅपंड वन नाईट', 'किंगकॉग, 'नार्थ बाई', 'सिंगिंग इन द रेन', 'सिटी लाइट्स', 'रीयर विंडो', 'स्नो व्हाइट अँड सेवन ड्वार्फस' आदि फिल्मों का नाम प्रसिद्ध क्लासिक फिल्मों में लिया जाता है जिसका प्रभाव आगे भी बना रहा।

दूसरे महायुद्ध के बाद अन्य देशों की फिल्में भी हॉलीवुड़ में अपना स्थान पा चुकी थी। पोलॅंड के रोमान पोलांस्की, क्रिज्तोफ जानुसी, आंद्रे वाज्यां का नाम निर्देशन के क्षेत्र में हॉलीवुड़ से होकर विश्व सिनेमा में अपनी छाप छोड़ते चला गया। 1990 में क्रिस्तोफ किस्लॉवस्की को उनके द्वारा बनाई गई फिल्में 'द डिकेलॉग', 'द डबल लाइफ ऑफ वेरोनिक', 'थ्री कलर्स' (ट्रिलॉजी) के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तरों पर काफी सफलता मिली और सराहा भी गया। स्पेन ने भी हॉलीवुड़ को नजर में रखते हुए अंग्रेजी फिल्में बनाना आरंभ किया इनमें 'द मशीनिस्ट', 'द अदर्स', 'बेसिक इंस्टिंक्ट 2', 'गोयाज घोस्ट' जैसी फिल्में चर्चित हो गई। कॅनड़ा फिल्म इंडस्ट्री पर भी अमेरिकन हॉलीवुड़ और वितरण व्यवस्था का अधिकार रहा है। टोरंटो, मांट्रियल और वेंकुवर फिल्म निर्माण के प्रमुख केंद्र रहे हैं। यहां सरकार से अनुदान पाकर बड़ी संख्या में फिल्में बनाई जाती है। यह फिल्में हॉलीवुड़ की क्लासिक और व्यावसायिक कसौटियों पर खरी उतरती है, अतः कॅनड़ा की फिल्म इंडस्ट्री को हॉलीवुड़ नॉर्थ के नाम से जाना जाता है। यहां से कई निर्माता, निर्देशक, फिल्मी कलाकार और तकनीशियन हॉलीवुड़ में भी अपने जगह पाने में सफल रहे हैं।

आ. पोस्ट क्लासिक हॉलीवुड़

1960 के बाद पूरी दुनिया में मनोरंजन को लेकर कई नए अविष्कार तकनीकी तौर पर हो गए। उसमें टेलिविजन का प्रचार-प्रसार बड़ी तेजी के साथ हो गया और उसका सीधा असर हॉलीवुड़ की फिल्मों पर होने लगा। बॉक्स ऑफिस पर बहुत अच्छी फिल्में और बिग बजेट की फिल्में वह असर नहीं छोड़ पाई जिसकी अपेक्षा फिल्म इंडस्ट्री को थी। बेहतरीन निर्माण, भव्यता, बड़ा परदा, सिनेमा स्कोप, म्यूज़ीकल और एपिक शैली के बावजूद भी फिल्मों की ओर दर्शकों का आकर्षित न होना सारी फिल्म इंडस्ट्री के लिए खतरे की घंटी बजना था। इस दौर में आई 'क्लियोपेट्रा' और 'हॅलो डॉली!' जैसी भव्य और बेहतरीन फिल्मों को दर्शकों ने नकारा और वे बॉक्स ऑफिस पर पिटती गई। बड़ी फिल्म कंपनियां इस हालात से बाहर निकलने के लिए और दर्शकों को आकर्षित करने के लिए बेहतर और नई तकनीकों पर पैसा खर्च करने लगे। वाईड स्क्रीन को बेहतर बनाया गया, सिनेमा स्कोप का जन्म हो गया, स्टीरियो साऊंड सिस्टम का जन्म हो गया। इस बहाने तकनीकी प्रयास बेहतर होते गए पर यह बदलाव दर्शकों को आकर्षित ना कर सका। सिनेमा के बाजार में तेजी से होते परिवर्तन के कारण बड़े स्टूड़ियो चिंता में पड़ गए। यूरोपीयन 'आर्ट सिनेमा' और फ्रेंच 'न्यू वेव' ने अमेरिकन सिनेमा पर इस दौरान प्रभाव डालना आरंभ किया था। इतालीयन निर्माता-निर्देशक अंतिनियोनी की 'ब्लोअप' जैसी फिल्म सामने आई और उसने सफलता पाई तो हॉलीवुड़ के जान में जान आई। उसके मर्म को जानते हुए युवा निर्देशकों को उनके मनमुताबिक फिल्में बनाने की आजादी प्रदान की। स्टूड़ियो नियंत्रण से दूर फिल्में निर्माण करने के लिए पैसा भी उपलब्ध करवाकर दिया। फिल्म निर्माण में उतरनेवाली यह नई पीढ़ी तकनीकों से लैंस तो थी ही उसके साथ विविध संस्कृतियों, विचारों, कल्पनाओं, संभावनाओं से भी भरी-पूरी थी। नई पीढ़ी क्या चाहती है इसकी नब्ज भी इन्होंने पकड़ रखी थी। फिल्मों का दर्शक वर्ग ज्यादा मात्रा में तीस से कम उम्र का था तो उनके मन को टटोलनेवाले युवा पीढ़ी के हाथों में फिल्म निर्माण की बागड़ौर देना अच्छी पहल साबित हो गया।

"नया हॉलीवुड़ यानी पोस्ट क्लासिकल हॉलीवुड़, जिसे 'अमेरिकन न्यू वेव' के नाम से जाना जाता है। सन् 1960 से लेकर नब्बे के दशक में शुरुआती वर्षों में युवा फिल्मकारों ने तकनीकी और कथानक के स्तर पर

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

क्लासिक हॉलीवुड़ सिनेमा से बिल्कुल अलग फिल्मों का निर्माण किया। जिनमें 'बोनी अँड क्लाइड' और 'द ग्रॅजुएट' जैसी फिल्मों का नाम लिया जा सकता है। इन फिल्मकारों की सफलता से कई बड़े स्टूड़ियो भी अपनी शैली और काम करने के तौर-तरीके बदलने को मजबूर हो गए।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 59)* क्लासिक हॉलीवुड़ की वस्तुनिष्ठता की जगह पर विषयनिष्ठता पर जोर दिया गया। नए समाज, नई राजनीति, नया पारिवारिक जीवन, खुली विचार प्रणाली, सेक्स से जुड़े विषय और समस्याओं के प्रति ज्यादा खुलापन आदि समाज मन में उथल-पथल मचा रहे थे। फिल्म निर्माण करनेवाली नई पीढ़ी ने इस नब्ज को पकड़ते हुए अपने फिल्मों में इन्हीं विषयों को उठाकर दर्शकों की बदलती मांग को न्याय देने की कोशिश की। 'बोनी अँड क्लाइड', 'कूल हँड ल्यूक', 'मिडनाइट काउब्वॉय', 'पेपर मून', 'डॉग डे ऑटरनून', 'चायना टाउन', 'टॅक्सी ड्रायवर', 'स्टार वार्स', 'जॉज' जैसी चर्चित फिल्मों ने हॉलीवुड़ की चिंता और घबराहट को दूर करने मे मदत की।

इ. थर्ड सिनेमा मूवमेंट

"सन् 1960 में लॅटिन अमेरिका में शुरू हुए सिनेमा आंदोलन को थर्ड सिनेमा मूवमेंट के नाम से भी जाना जाता है। 'टुवर्ड्स अ थर्ड सिनेमा' के नाम से तैयार मॅनिफेस्टो से यह शब्द चलन में आया। इस सिने आंदोलन से जुड़े फिल्मकारों ने नव-उपनिवेशवाद और पूंजीवाद के विरोध में फिल्में बनाई। इन फिल्मकारों ने हॉलीवुड़ के प्रचलित लोकप्रिय सिनेमा का विरोध भी किया। अर्जेंटाइना में ग्रुप सिने लिब्रेशन, ब्राजील के सिनेमा नोवो और क्यूबा को रिव्योल्यूशनरी सिनेमा आंदोलन ने सयुक्त रूप से थर्ड सिनेमा की फिलॉसफी को जन्म दिया।" *(पश्चिम और सिनेमा, पृ. 63)* मुख्य धारा से अलग, हॉलीवुड़ की सफलता-असफलता के परे जाकर या व्यावसायिक दृष्टि को थोड़ा दूर रखते हुए दुनिया भर में निर्मित विचार, कलाओं, संदेशों, नए प्रयोगों को थर्ड सिनेमा ने स्पेस तैयार किया और हॉलीवुड़ के परंपरागत सिनेमा निर्माण से हटकर नव-निर्मिति की। फिल्म वितरण और प्रदर्शन की परिभाषा को इस सिनेमा ने बदलने की कोशिश की। इस धारा के निर्माताओं का मानना था कि सिनेमा के भीतर अपने आपको प्रदर्शित करने की ताकत हो और दर्शक खुद उसे देखने के लिए उत्सुकता के साथ सिनेमा घरों में आए। थर्ड सिनेमा मूवमेंट के साथ बाद में कई सिनेमा आंदोलन जुड़ते गए उसमें कम बजट की फिल्मों को भी मंच मिलता गया। इस आंदोलन में – 1. रीमार्डनिस्ट सिनेमा और 2. भूमिगत सिनेमा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। रीमार्डनिस्ट सिनेमा का उद्देश्य संवेदनात्मक और आध्यात्मिक पक्ष को सामने लाना था। सॅन फ्रांसिस्को, न्यूयार्क, ब्रिटेन और सिडनी तक फैले सिनेमा गतिविधियों को भूमिगत सिनेमा के नाते पहचाना गया। यह मूवमेंट अपने अलगावों के साथ इस बात पर कायम था कि स्टूड़ियों की परंपरागत पद्धति को नकारकर फायनान्स की गुत्थियों को सुलझाना और वितरण के अलग तरीके ढुंढ़ना।

स्वतंत्रता को बनाए रखनेवाले निर्देशकों के लिए यह स्वाभिमान की बात थी, अतः जिन आंदोलनों और विचारों के साथ वे सिनेमा से जुड़े थे उसे वे बखूबी निभा भी रहे थे। इस विचार प्रणाली के माध्यम से लो बजट की अच्छी फिल्मों को पहचान भी मिली और आगे चलकर इस प्रकार के फिल्मों के फेस्टिवल्स भी आयोजित होने लगे। इस मूवमेंट के साथ नो-वेब सिनेमा, नो बजट सिनेमा, मायक्रो सिनेमा, ग्रुप सिने लिब्रेशन आदि मूवमेंट भी जुड़ते गए। शिकागो, न्यूयार्क, बोस्टन और न्यू हॅवेन जैसे शहरों में अंडरग्राउंड फिल्म फेस्टिवल के आयोजन से इन फिल्मों को अच्छे तरीके से पहचान भी मिल गई।

7. विश्व सिनेमा और ऑस्कर

दुनिया भर के सिनेमा को नवाजने और उसको प्रोत्साहन-पुरस्कार देने के लिए फिल्मी दुनिया में सिनेमा के हर हिस्से को चुना जाता है। विविध कॅटॅगरियों में कई पुरस्कारों का वितरण होता है। सबसे ज्यादा कॅटॅगरियों में अद्भुत प्रभाव डालनेवाली और ज्यादा पुरस्कार पानेवाली फिल्म उस साल की उत्कृष्ट फिल्म कहलाई जाती है। अमेरिका की 'अॅकॅड़ेमी ऑफ मोशन पिक्चर आर्ट्स एंड साइंसेज' द्वारा स्थापित और प्रदत्त

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

'अकॅडमी पुरस्कार' जिसे 'ऑस्कर पुरस्कार' भी कहा जाता है, फिल्म व्यवसाय से जुड़े सर्वश्रेष्ठ निर्देशकों, कलाकारों, लेखक व तकनीशियनों को दिया जानेवाला प्रतिष्ठित सालाना पुरस्कार है। पहला समारोह 16 मई, 1929 को आयोजित किया गया था और 1928 से आज तक हर साल इस प्रकार के अकॅडमी पुरस्कार दिए गए हैं। इस पुरस्कार को पानेवाला फिल्म इंडस्ट्री का हर शख्स गर्व महसूस करता है और उसके देश को भी अपने कलाकारों के प्रति गौरव महसूस होता है। विविध कॅटॅगरियों में पुरस्कार प्राप्त करनेवाले हर एक कलाकार का जिक्र करना संभव नहीं, उसकी सूची बहुत लंबी हो सकती है। यहां पर सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार पानेवाली फिल्मों की सूची दी है।

ऑल अबॉउट ईव्ह (1950)	द गॉडफादर (1972)	फॉरेस्ट गंप (1994)
ऍन अमेरिकन इन पॅरिस (1951)	द स्टिंग (1973)	ब्रेव्ह हार्ट (1995)
द ग्रेटेस्ट शो ऑन अर्थ (1952)	द गॉडफादर 2 (1974)	द इग्लिश पेइशंट (1996)
फॉर्म हिअर टू इट्रेनिटी (1953)	वन फ्लेव ओवर द कुकोज् नेस्ट (1975)	टाइटॅनिक (1997)
ऑन द वॅटरफ्रंट (1954)	रॉकी (1976)	शेक्सपिअर इन लव्ह (1998)
मर्टी (1955)	अनाइ हॉल (1977)	अमेरिकन ब्यूटी (1999)
अरॉउंड द वल्ड इन 80 डेज् (1956)	द डिअर हंटर (1978)	ग्लॅडीअटोर (2000)
द ब्रिज ऑन द रिव्हर कवाई (1957)	क्रॅमेर वायज क्रॅमेर (1979)	ब्यूटिफुल माइंड (2001)
गिगि (1958)	ऑर्डनरी पिपल (1980)	शिकागो (2002)
बेन-हुर (1959)	चॅरिअटोस ऑफ फाइअर (1981)	द लॉर्ड ऑफ द रिंग्ज : द रिटर्न ऑफ द किंग (2003)
द अपार्टमेंट (1960)	गांधी (1982)	मिलिऑन डॉलर बेबी (2004)
वेस्ट साइड स्टोरी (1961)	टर्मस् ऑफ इंडिअरमेंट (1983)	क्रॅश (2005)
लॉरेंस ऑफ अरेबिया (1962)	अम्बेड्यूअस (1984)	द डिपार्टेड (2006)
टॉम जोन्स (1963)	आउट ऑफ आफ्रिका (1985)	नो कट्री फॉर ओल्ड मॅन (2007)
माय फेअर लेडी (1964)	प्लॅटॉन (1986)	स्लम डॉग मिलिऑनर्स (2008)
द साउंड ऑफ म्युझिक (1965)	द लास्ट एंपॉयरॉर (1987)	द हर्ट लॉकर (2009)
अ मॅन फॉर ऑल सीझन्स (1966)	रेन मॅन (1988)	द किंग्ज स्पीच (2010)
इन द हेट ऑफ नाईट (1967)	ड्रायव्हिंग मिस डेअसी (1989)	द आर्टिस्ट (2011)
ऑलिवेर! (1968)	डांसेस वुइथ वॉल्वेज (1990)	आरगो (2012)
मिडनाइट काऊबॉय (1969)	द सायलेंस ऑफ द लॅब्स (1991)	12 इअर्स अ स्लेव्ह (2013)
पॅटॉन (1970)	अनफॉरगिव्हन (1992)	बर्ड मॅन (2014)
द फ्रेंच कनेक्शन (1971)	शिन्लर्डस लिस्ट (1993)	स्पॉटलाईट (2015)

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

'गांधी' (1982) बेस्ट ऑस्कर फिल्म का एक दृश्य

ऑस्कर पुरस्कारों से सम्मानित इन फिल्मों के अलावा और कई फिल्में भी हैं जिन्हें सर्वोत्कृष्ट तो चुना नहीं परंतु किसी इक्का-दुक्का कॅटॅगिरी में यह पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इन पुरस्कारों से विश्व सिनेमा को गति मिली है और प्रोत्साहन से नए प्रयोग तथा विकास का भी मार्ग खुल चुका है।

सारांश

पिछले सवा सौ वर्षों का सिनेमा का इतिहास है। 1895 में विश्व कि पहली फिल्म 'अरायव्हल ऑफ द ट्रेन' बनी और उसके देखते-देखते अब तक कितना सफर तय किया है सिनेमा ने। इस परिदृश्य को देखकर दुनिया चकित होती है। एक ही साथ उसे नजरभर देखने की क्षमता भी हममें नहीं है। कितना भी समेटने और लिखने की कोशिश करे बहुत कुछ छुटने का एहसास होता है। खैर विश्व सिनेमा और भारतीय सिनेमा के इतिहास का विहंगावलोकन पाठकों को फिल्मी दुनिया के सवा सौ वर्षों का सफर जरूर करवा सकता है। कई प्रवाहों, कई देशों और कई भाषाओं में चल रही इस दुनिया में बेरोजगारों को रोजगार देने की बहुत अधिक क्षमता है। केवल इसके दरवाजे पर कुछ कौशलों के साथ दस्तक देने की आवश्यकता है। युवकों को यह उद्योग अपने हाथों में उठाकर चमकता सितारा बना सकता है। मेहनत, लगन, परिश्रम, कुशलता, तपस्या के बलबूते पर इस दुनिया में अपने-आपको स्थापित किया जा सकता है। सिनेमाई जगत् से किसी भी देश की अर्थव्यवस्था बलशाली बन जाती है। बहुत अधिक संभावनाएं और रोजगार निर्मिति का क्षेत्र होने के कारण इसे इंडस्ट्री भी कहा जाता है।

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पश्चिम और सिनेमा – दिनेश श्रीनेत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
2. बॉलीवुड़ पाठ : विमर्श के संदर्भ – ललित जोशी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012.
3. सिनेमा : कल, आज, कल – विनोद भारद्वाज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006.
4. सिनेमा की सोच – अजय ब्रह्मात्मज, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, आवृत्ति 2013.
5. सिनेमा के चार अध्याय – डॉ. टी. शशिधरन्, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014.